आषाढ़ शुक्ला ४ अथवा पञ्चमी—

आज सूथन पटका धरें सूथन पटका धोरा वारे गुलाबी फेंटा मोर सिखा मध्य को श्रृंगार ठाढ़े वस्त्र सफेद डोरिया के शोभते आभरण मोती के साथ फूल के श्रृंगार होय यह ताज के भाव के अथवा फूल के श्रृंगार आठमें ये जरूर होय है। पद फूलन के श्रृंगार के मल्हार राग में तथा मल्हार के पद फूल के श्रृंगार के विशेष—ओढ़े लाल उपरनी झीनी।

आषाढ़ शुक्ला ५—आज से परदनी आड़बन्द ये हांसिया के धरें श्रृंगार छोटे होय आज सफेद हरे हासिया को आड़बन्द धर्यो मोर पक्ष की मोरशिखा छोटो श्रृंगार मोती के आभरण पिछवाई हांसिया की और सब आभरण मोती के पद मल्हार के गवे—

आषाढ़ शुक्ला ६ कसूम्बाछठ षष्ठी पंडग—

देहली वन्दनमाल दुहेरा गोपी वल्लभ आज ही विट्ठलनाथजी के यहाँ से तिलकायत श्रीगोविन्दजी गादी बिराजे को उत्सव आज ही श्रीवल्लभ महाप्रभु के पिता श्रीलक्ष्मण भट्टजी को जन्मोत्सव।

वस्त्र कशूमल पिछोड़ा पाग ठाढ़े वस्त्र सफेद जामदानी जैसे आभरण सब मोती के मोर पक्ष की सादा चन्द्रिका शिरपेच लूम वनमाला को श्रृंगार चार कर्ण फूल हासधवल आदि पिछवाई कसीदा की कसीदा जैसी मोरन के पंख बिखरे भये गरमी से वर्षा के आगम ऊपर बादलन की घुमड़ाहट भारतीय एवं जापानी कला के साम्यवारी पिछवाई खण्ड। आज से गहरे रंग कसूमल आदि के वस्त्र धरें। पिछवाई जापान की फड़द दक्षिण की आड़ी तथा बाईं तरफ भारतीय कला की फड़द पिछवाई की। गो० ति० श्रीगोवर्द्धनलालजी के राज्य काल में एक जापान की कलात्मक अवरनुमा फड़द आई गोस्वामीजी ने सर्वत्र घोषणा करवाई या फड़द की दूसरी दिश ऐसी की ऐसी बनावे वाथि खर्चा यहाँ से दियो जायगो सामान को। तथा इनाम हू और प्रभु सेवा तब गुजरात की एक बाई ने जो हेड मास्टरनी हुती वाने बीड़ा लै शीघ्रातिशीघ्र फड़द भेट करी सिद्ध करिके। वह आज हू उत्तर की ओर दर्शित होय है।

आज वि० १९८४ में श्रीविट्ठलनाथजी के यहाँ से दुहेरा मनोरथ कर्ता दाऊजी के पुत्र न होवे से लीला प्रवेश दाऊजी को भये बाद आप गोविन्दजी गादी बिराजे। वह उत्सव गोस्वामिनी तिलक के बहूजी, लक्ष्मी बहूजी ने गोद लिये तथा तीन साल तक तिलकायत की सेवा करी आपके पिता श्रीकृष्णरायजी हुते। आपको नाम पूर्व में वहाँ गोराजी कहे जाते। वही श्रीगोविन्दजी भये इनको जन्म दिन कार्तिक शुक्ला १४ को आवे तामें इनकी सेवा नगर विकास जनप्रियता प्रभु रस की महानता लिखेंगे।

आज ही लक्ष्मण भट्टजी को जन्म दिन है। दक्षिण में षष्ठी पंडगू अर्थात् कसूम्बा छट्ठ को मेला लगे है ऐसो सुन्यो है।

श्री लक्ष्मण भट्टजी श्रीबालंभट्टजी के पुत्र जन्म वि० १५१० आज के दिन कांकरवाड़ ग्राम में भयो आपके भाई बड़े जनार्दन भट्ट हुते इनको विवाह सुसमी नामक ब्राह्मण की पुत्री इल्लम्मागारु के साथ भयो इनकों चार पुत्र दो कन्या भई। बड़े पुत्र रामकृष्ण जो आगे जायके संन्यासी भये श्री रामचन्द्र काशीनाथ एवं जगद्गुरु श्रीवल्लभ भये दो कन्या सरस्वती सुभद्रा या प्रकार छः सन्तान भई जामें ही यहाँ श्रीवल्लभ को प्राकट्य भयो।

आज की भावना एक और है। आज भक्त कामना कल्पतरु श्रीनाथजी ने विट्ठलवर को विप्रयोगानुभव सों मुक्तकर दर्शन दै, सेवा दै कृतार्थ किये यासो ही अनुराग स्वरूप कसूमल वस्त्र धरें यश प्रसार है सफेद ठाढ़े वस्त्र सों आप छः मास बाद आज सेवा करी। चन्द्र सरोवर में विप्रयोगानुभव बाद आज ही पुनः सेवा में, प्रवेश भयो। "परम-कृपालु श्रीवल्लभ नन्दन करत कृपा निज हाथ दे माथे।" यारी वार्ता आज ही की है। कृष्णदास को सनाथ किये।

पद या प्रकार गाये जाँय—

मंगला—आईजु श्याम घटा। श्रृंगार होते में—देखो भाई ठाढ़े नन्द किशोरनी के आज लागत लाल तथा कसूमी वस्त्रन के भाव के पद गवे। श्रृंगार सन्मुख—लाल माई बाँधे कसूम्बी पाग। राजभोग में उत्सव होवे सो बधाई भये वल्लभ नन्दन जन अनूपसरूप कह्यो। उत्थापन—भवन मेरे कैसे कसूमल। भोग—गहरे अंग कसूमी सारी। आरती—लाल की शोभा कहत न आय। शयन—कुञ्ज महल के आंगनमध्य लाल माई भीजत आये गेह हू चल नन्द-नन्दन जन बोली।

आषाढ़ शुक्ला ७—वस्त्र कसूमल सेलाकी परदनी लाल मदील श्रीमस्तक पर हीरा के आभरण छोटो श्रृंगार पिछवाई चितराम की दाख माड़वा की ठाढ़े वस्त्र नहीं पद के भाव को श्रृंगार श्रीमस्तक पर गोल चन्द्रिका—सोहत लाल परदनी झीनी के भाव को श्रृंगार माने। मल्हार के पद कसूमल के भाव के गवे।

आषाढ़ शुक्ला ८—मल्लकाछ, हांसिया को पटका नहीं। चोटी तथा पटका धरे तो चोटी नहीं धरे-पटका एक धरे दुहेरा मल्लकाछ आवे तो दुहेरा पटका धरें आज हासिया की मल्लकाछ पटका नहीं चोटी ठाढ़े वस्त्र चन्दनी टिपारा सफेद लाल हासिया के आभरण मोती के मध्य को कुण्डल को श्रृंगार पिछवाई चितराम की स्वामिनीजी वृक्ष लता पकड़ के खरे हैं तथा लता-पता कुञ्ज मे श्रीजी खण्ड भी वृक्षावली वारो टिपारा जोड़ सफेद मयूर पक्ष को।

सांझ को फूलन को श्रृंगार नियम को मल्लकाछ टिपारा पटका तथा जोड़

आभरण के स्थान सब कलीन के पिछवाई श्याम धरती में सफेद काम की जल बिहार की शृंगार में भी ठाड़े वस्त्र रहे फूल के मैं की।

विशेष पद—गावें-गावें गोधन संग गावे।

आषाढ़ शुक्ला ९—वस्त्र कपासी नीले हांसिया के पिछोड़ा पाग हीरा मोती के आभरण मध्य को शृंगार पिछवाई हासिया की कीर्तन मल्हार के।

आषाढ़ शुक्ला १०—वस्त्र गहर गुलाबी धोती उपरना पाग नागफणी को कतरा ठाड़े वस्त्र नहीं आभरण बड़े मोतीन के सेहरा दुमालापे धरें चोटी पिछवाई चितराम की ब्याहला की पद सेहरा के भाव के मल्हार के। सब ठिकाने बैंगन आवें। यहाँ चातुर्मास्य में भी बेगन अरोगे। श्री जगदीश की आज्ञानुसार बहुतायत साकन में होय। और घरन में आगे बैंगन नहीं अरोगे तासो बेगन के ३६ प्रकार के व्यञ्जन अरोगाये। काका वल्लभजी के वचनामृत में वर्णित है। तथा भगवदाज्ञा की मर्यादा श्रीजी में राखी तासों चातुर्मास्य में श्रीजी बैंगन अरोगे।

आषाढ़ शुक्ला ११—वस्त्र गुलाबी हलके हांसिया हरे [illegible] काछनी सूथन चोली नहीं पहले मुकुट केवल फूल के शृंगार हेतु सूथन [illegible] जैसे ठाड़े वस्त्र सफेद मुकुट मोती को कुण्डल आभरण हास नवल पायल बाजू पहुँची ये सब मोती के गुलाबी पटका (पीताम्बर) हांसिया वारो पिछवाई खण्ड हू हांसिया वारो। सायं फूलन के शृंगार छेले समस्त वस्त्र आभरण फूलन की कलीन के ये शृंगार हू होय ही है। पिछवाई चोकड़ी की गुलाबी [illegible] [illegible] धरती पे फूलन के जैसी भारी कुण्डल वनमाला को शृंगार ठाड़े वस्त्र रहे।

विविध प्रकार की सामग्री लुच्चंइ के स्थान में माड़ा (रोटी) बासोंदी आदि।

मंगला—सखी री बूंद अचानक लागी। शृंगार—बोले माई गोवर्द्धन पर मुरवा। रा० भ०—वृन्दावन मुनिवृन्दादिक। उत्थापन—आज पट पीत की परछाई। भोग शृंगार होते—फूलन सो बेनी—फूलन की चोली—फूल के महल में सन्मुख—फूल के महल में बैठे माधव आरती में श्यामा-श्याम सुन्दर फूल के भवन।

आषाढ़ शुक्ला १२—वस्त्र खसखसी आड़बन्द हांसिया वारे। पाग श्री अंग खुल्यो। ठाड़े वस्त्र नहीं। पिछवाई वस्त्र जैसे मोती हीरा के आभरण। छोटो शृंगार मल्हार के पद।

आषाढ़ शुक्ला १३—जेष्ठवदी १ को वह शृंगार [illegible] [illegible] की त्यों वस्त्र तथा ये शृंगार आड़बन्द को छेलो आड़बन्द सफेद मलमल को पिछवाई खण्ड सफेद मलमल के बिना किनारी के छोटे मोती के आभरण वही हार श्री मस्तक पर खिड़की की पाग कतरा मोर पछ को। पद मल्हार के उष्णकाल को आड़बन्द को छेलो शृंगार यदि हिंडोरा दूज को स्थापन होय तो [illegible] आड़बन्द

या परदनी को शृंगार श्रावण वदी एकम को फिर उष्णकालवत् होय यह नियम को नहीं। एच्छिक होय।

आषाढ़ शुक्ला १४—वैशाख शुक्ला १५ वत् शृंगार वस्त्र सफेद परदनी पाग खण्ड पिछवाई मोती के आभरण हलको शृंगार मोर पक्ष सफेद की किलंगी आज भोग के समय वनमाला तथा गोवर्द्धन माला धरें छेली उष्ण कालिक सेवा तथा आरती भये बाद शृंगार के साथ बड़ी होय जाय।

वनमाला गोवर्द्धन माला को सरूप भावना लीला—

वन-वन विपिन बिहारी नवीन वर्षारम्भ के द्वादश वन २४ उपवन के नव पल्लवित पल्लव की वनमाला धरे जो सब प्रकार के पत्र पुष्पादि से युक्त होय श्री अंग स्थित जैसी वनमाला है वैसी ही वनमाला धरावे। श्रीहस्त से श्रीहस्त तलक जो रूप है वेसो फूलन को पल्लव को। गोवर्द्धन माला (कन्दरा पर आवे वो माला) यामें कोयल छोटी डाली दल सहित। यामें पुष्प नहीं होय पुष्प सहित बेल के पत्ता जुही मोगरा मोतिया आदि गोवर्द्धन पर्वत के चारो दिशा १३२ वन है उनमें अब ९६ वनन की सौरभ सो पल्लवित पुष्पित के ही गोवर्द्धन श्री माला धरायके बिराजे है। वा भाव सो गोवर्द्धन माला धरें बारह महिना में आज ही धरे। सायं भोग के सरेबाद धरें और ग्वाल के पूर्व बड़ी होय जाय।

यह या प्रकार होय मल्हार में गोवर्द्धन और मेघ मण्डल वर्णन।

मंगला—आये माई बरसा के अगवानीं। शृंगार—सखीरी देख शोभा वन की। राजभोग—गोवर्द्धन पर्वत के उपर परम। उत्थापन—अंग-अंग धन कान्ति। भोग—अद्भुत कौतुक देख सखीरी। आरती—देखो माई शोभा साँवल तन। शयन—दृगन जोलो 'सुख होय तोलो' मान—पोढ़वे पर।

आषाढ़ शुक्ला १५ आषाढ़ी पूनम, व्यास पूनम, कचौली पूनम, गुरु पूनम—

आज के दिन ही २४ अवतारन में श्री वेद व्यासजी को जन्म भयो आज के दिन ही पवन धारणा होय। अषाढ़ी तुलें। आज कचोली अरोगे। आज गुरुन को पूजन प्रभुवत् करें। जो अध्यापन करावे कथा करे-उनकी।

देहली वन्दन माल हांडी गीजड़ की सामग्री गोपीवल्लभ में पिछवाई चितराम की बरसा के भाव की। जामें सुनहरी बिजली चपकती भई तथा ग्वाल-बाल घुग्घी ओढ़े गायन के साथ ठाड़े है। अनेक भावपूर्ण दर्शनीय। ठाढ़े वस्त्र जामदानी को वस्त्र सूथन लाल चूँदड़ी को काछनी लाल चूँदड़ी की नीचे ऊपर श्याम चूँदड़ी चोजूली पीताम्बर (पटका) आभरण मुकुट मोती के। हास नवल कुण्डल मयूराकृत मोती के वन माला को शृंगार। मोती झीने को छलो होय उष्णकाल के खण्ड मोती के आभरण। नख-शिख हथ सांकलादि समस्त मोती के

आभरण धरें। आज मंगला में उपरना धरे आज सो ठाड़े वस्त्र सदा आमें। बाहर चन्दवा भीतर दिवालगिरी। डोल तिवारी मणिकोठा निज मन्दिर आदि में चन्दवा वन्दन माल पड़दा वगेरे रंगीन चढ़े। पंखा रंगीन चढ़े कुञ्जातूत्थान में कलात्मक ढंग सो फूल-पत्ती बेल आदि आवे। चन्दन की बरणी में रंगीन वस्त्र आवे पंखा बगैर सब रंगीन ऊष्णकालिक सेवा विधा। सखड़ी में कचोली धरोगे।

"वेदाः श्रीकृष्ण वाक्यनि व्यास सूत्राणिचैवहि।
समाधि भाषा व्यासस्य प्रमाणं तच्चतुष्टयम्।"

अतः पुष्टि मार्ग में प्रमाण चतुष्टय के आधार पै व्यास चौबीस अवतारवत् होइवे सें यहाँ सेवा में हू देहली वन्दनमाल गुरुवत प्रभु को मान उनकी सेवा शृंगार भोग रागन में रसवृष्टि करि प्रभु सुखहितार्थ यह उत्सव मानें।

पद निम्न प्रकार के होय—

मंगला में—भीजत कब देखो इन नेना। शृंगार होते में—वृन्दावन हम क्यों न भये मोर। देखो माई ये बड़भागी मोर। शृंगार सन्मुख—एरी नागर नन्दलाल मोर। राजभोग सन्मुख—वृन्दावन सघन कुञ्ज। उत्थापन—नयो नेह नयो मेह। श्याम वृषभान किशोरी। भोग में—माईरी श्याम घन-तन दामिनी। आरती में—आज पट पीत की छबिपाई। शयन में—चूंदड़ी के भाव के पद गवे।

पुष्टि मार्ग में गुरु महत्ता तथा गुरु स्वरूप की व्याख्या—

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णु गुरुर्देवो महेश्वरः। गुरु साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरवेनमः ॥१॥
वसुदेव सुतं देवं कंस चाणूर मर्दनम् देवकी परमानन्दं कृष्णं बन्दे जगद्गुरुम् ॥२॥

वल्लभ सम्प्रदाय पुष्टि मार्ग में चार रूप में वैष्णव एवं गुरू स्वरूप के दर्शन होय है। वैष्णव सात्विक राजस तामस तथा निर्गुण होय है। याही प्रकार गुरू के चार रूपसों दर्शन होय हैं। वह ऊपर के श्लोक सो स्पष्ट है। ब्रह्मा रजोगुणी और सृष्टि रचियता है। गुरू पुष्टि सृष्टि वृद्धी में ब्रह्मावत गुरू तमोगुणी तामस भगवान शंकर संहारात्मक—यहाँ दुःख, काम, क्रोध, लोभ, मद मत्सर्यादि को संहार कर तमोगुण के दर्शन दे विष्णुवत् पालन स्थिति कर भक्तिभाव रसदान दे कृतार्थ करे पर ब्रह्म स्वरूप निर्गुणता में दर्शन दे यासो दूसरो श्लोक में कृष्ण ही गुरू है उनके विभिन्न रूप है वसुदेवसुत रजोगुणी, कंस चाणूर मर्दन करवे वारे तमोगुणी शिव। देवकी परमानन्द सरूप सतोगुणी निर्गुण रूपेण कृष्ण वंदे जगद्गुरू। यासो ही पुष्टि मार्ग की जयन्तीन में परमानन्द दास को पद "पद्नधर्योजनताप निवारण" यह पद गवे और यामें बीच की तुक में कह्यो है दीनानाथ दयालु जगत गुरू आरति हरण भक्त चिन्तामण। यह जयन्तीन में या पद को स्पष्ट भाव व्याख्या लिखेंगे।

श्रीनाथजी

श्रीनाथ-सेवा-रसोदधि

तृतीय तरंग

यूथाधिपा

श्री स्वामिनी ठकुरानी श्री राधारानी

सेवा-मास

श्रावण-भाद्रपद-आश्विन